प्रश्न 1. ——→ हिन्दी भाषा की उद्भव एवं विकास का विवेचन कीजिए?

अथवा —— कारण निर्धारित करते हुए इसके विभिन्न विकसित रूप को प्रस्तुत कीजिए

उत्तर ——→ भाषा के अर्थ में हिन्दी शब्द के प्रयोग का इतिहास ही फारसी और अरब से प्रारम्भ होता है। विद्वानों की यह मान्यता है कि हिन्दी सदी के कुछ पूर्व से ही ईरान में (जबान-ए-हिन्दी) का प्रयोग भारत की भाषाओं के लिए होता रहा।

भारतवर्ष में भी भाषा के अर्थ में हिन्दी शब्द के प्रयोग का प्रारम्भ मुसलमानों द्वारा ही किया गया। भारतीय परम्परा में प्रचलित भाषा के लिए प्राचीन काल से ही भाषा शब्द का प्रयोग होता आया है। इसका प्रयोग क्रम से संस्कृत प्राकृत तथा बाद में हिन्दी आदि के लिए हुआ संस्कृत है (कुपजल) भाषा बहता नीर (भाषा जानत भेद भली चोली) तुलसीदास संस्कृत आदि ग्रंथों की हिन्दी टिकाओं में भाषा टीका रूप में भी यह शब्द इसी अर्थ प्रयुक्त हुआ है। प्रायः देखा जाता है कि (हिन्दी) और (हिन्दवी) शब्द पहले अर्थ रखते थे जो अर्थ में प्रयुक्त होते थे यह उपयुक्त नहीं जान पड़ती है ही भाषा के लिए बिना किसी विशेष कारण के नाम साथ-साथ उत्पन्न होगा और विकसित होकर अर्थ में चलना कुछ उपयुक्त नहीं लगता। आरम्भ में ये शब्द किस्यों से ज्ञात था कि सुरक्षी ने हिन्दी शब्द का प्रयोग भारतीय मुसलमानों के लिए किया है और हिन्दी शब्द का प्रयोग मध्य देशीय भाषा के लिए किन्तु ऐसा लगता है कि

2.

मूल कोई अधिक दिनों तक नहीं चला, अरबी फारसी 'तुर्की' के बहुत से प्रचलित भारतीय शब्द मुसलमानों की भाषा में गृहीत होकर और (हिंदी, हिन्दवी शब्द प्रायः समानार्थी हो गये किन्तु पूर्णतः नहीं।

हिंदी शब्द के अविच्छिन्न प्रयोग की परम्परा देखिए, हिन्दी के परवर्ती प्रथम गद्यकारों में भी मिलती है। हिंदी शब्द के आधुनिक अर्थ में प्रयुक्त होने का इतिहास भी बहुत ही विचित्र जान पड़ता है। प्रायः हिन्दी का प्रयोग उस भाषा के लिए मिलता है जो अरबी फारसी को भरती जा रही थी या उस भाषा जो बाद में विकसित होकर उर्दू कहलाय जनता में बारहवीं सदी के मध्य तक कुछ अपवादों को छोड़कर हिन्दी प्रायः इसी अर्थ में प्रयोग मिलता है। आधुनिक अर्थ में हिन्दी शब्द के व्यापक शब्द का श्रेय मूलतः अंग्रेजों का ही है। 1800 ई० में फोर्ट विलियम की स्थापना कलकत्ते में हुई जहाँ गिलक्राइस्ट (हिंदीया) हिन्दुस्तानी के अध्यापक नियुक्त हुए यदि गिलक्राइस्ट मध्य प्रदेश में वास्तविक प्रतिनिधि भाषा की अरबी फारसी भाषा की ओर झुकी हुई और ने संस्कृत की ओर अपनाया होता तो आज हिन्दी उर्दू का मानचित्र कुछ और ही होता इस प्रकार अंग्रेजों चाहे जिस उद्देश्य से किया हो 19वीं सदी के प्रथम 30 वर्षों में पं (हिन्दवी) या हिन्दी देवनागरी संस्कृत हिन्दी शब्दों को जोड़ दिया तो दूसरी ओर हिन्दुस्तानी को रेख्ता या उर्दू फारसी लिपि अरबी फारसी शब्दों मुसलमानों की स्वतः शासन के इशारे पर 1862 में हिन्दी उर्दू को एक भाषा के संयोजन के समान भाषा

Scanned with CamScanner

और इस प्रकार हिन्दी आज कल के अर्थ में निश्चित रूप में हो गयी हिन्दी भाषा को लेकर इस समय अनेकों नाम थे उनके निरन्तर हिन्दी और भारतेन्दु भाषाओं की अनेक शाखाओं में पुनर्निर्माण हो गयी।

हिन्दी भाषा की जन्म लगभग 1000 ई० के आसपास माना जाता है इसके इतिहास को भाषा की विकास की दृष्टि से तीन कालों में विभाजित किया जा सकता है

1. आदिकाल — 1000 ई० से 1500 ई० तक
2. मध्य काल — 1500 ई० से 1800 ई० तक
3. आधुनिक काल 1800 ई० से आज तक।

1. आदिकाल ⟹ यह हिन्दी का प्रारम्भिक काल है हिन्दी शब्द का प्रयोग सबसे पहले ईरान और फारस के निवासियों के लिए होता था और अरबी, फारसी इन की भाषा (भारतीय हिन्दी) कहा गया लगभग 14वीं शताब्दी के पंचतंत्र के अनुवाद करने के क्रम में इसकी मूलभाषा को संस्कृत के लिए (भारतीय हिन्दी) का प्रयोग मिला। इस प्रकार हिन्दी का प्रयोग संस्कृत के लिए ही प्रचलित रहा। आदिकाल के हिन्दी में अपभ्रंश के बहुत रूप मिलते हैं। साथ ही साथ हिन्दी के विभिन्न उपभाषाओं एवं बोलियों के रूप इस काल में बहुत स्पष्ट तथा सुव्यवस्थित नहीं थे। इस काल के साहित्य में कई बोलियों का मिश्रण मिलता है अपभ्रंश से हिन्दी में लगभग सभी ध्वनियाँ आ गयी हैं। किन्तु इसके कुछ नई ध्वनियों का भी इस काल में विकास हुआ - अपभ्रंश के संयुक्त स्वर नहीं थे हिन्दी में ऐ और औ संयुक्त स्वर रूप में प्रयुक्त होने लगे।

Scanned with CamScanner

4.

डॉ० धीरेन्द्र वर्मा ने अपनी हिन्दी साहित्य के इतिहास में हिन्दी में — ड, ण, ढ़, ड़, न्ह) की नवीन ध्वनियाँ मानी हैं। लेकिन आ युग पहुंचा है। ध्वनियाँ पहले से चलती आ रही थी शब्दावली की दृष्टि से आदिकालीन हिन्दी अपभ्रंश से बहुत भिन्न नहीं थी इसमें तद्भव शब्दावली है। तत्सम शब्द अपने रूप तथा वे स्वर अपने भी कम मात्रा में पाये जाते हैं। अपभ्रंश तथा आदिकालीन हिन्दी के शब्द-भंडार में विदेशी शब्दों की दृष्टि से अवश्य अन्तर मिलता है। अपभ्रंश में अरबी, फारसी तथा तुर्की शब्द की संख्या इससे अधिक नहीं होगी किन्तु हिन्दी के इस काल में मुसलमानों के बस जाने तथा शासन के कारण इन तीनों भाषाओं के प्रचलित शब्द आए कुछ पहले से भी आए विदेशी शब्द प्रायः इस वर्ग में आते हैं। फिर तद्भव वर्ग और तद भिन्न वर्ग में।

अतः अपने परिनिष्ठ रूप में हिन्दी का रूप कई प्रादेशिक बोलियों में विभक्त मिलता है। यदि कहा जाए कि हिन्दी क्षेत्र में अनेक भाषाएँ प्रचलित थी तो कोई भ्रान्ति स्वीकृत नहीं होगी।

राजस्थानी	ब्रज	खड़ी बोली	अवधी	छत्तीसगढ़ी	बिहारी	पहाड़ी
मारवाड़ी		बांगरू		हलबी	भोजपुरी	
मेवाड़ी		(हरियाणी)			मगही	
मालवी					मैथिली	
जयपुरी						

उपर्युक्त तत्कालीन हिन्दी का रूप इन प्रादेशिक हिन्दी भाषाओं के रूप कहे जा सकते हैं।

Scanned with CamScanner

अर्थात् अपने शैशव काल में हिन्दी मिश्र बोलियों के रूप में प्रसिद्ध थी। आदिकाल के साहित्य में मुख्यतः डिंगल बोलियों, दक्खिनी तथा मिश्रित रूपों का प्रयोग मिलता है। इस काल के प्रमुख कवि गोरखनाथ, विद्यापति, चन्द बरदाई, कबीर, खुसरो आदि हैं। प्राचीन खड़ी बोली के प्रयोग खुसरो तथा कबीर आदि में पाये जाते हैं।

(क) नाना कुआर औ जयरिया पकवान ... प्रकार

(ख) पिंजरा नारि ने आदर किया साथ नार पिंजरे में रख्या।

(ग) आ जन जो लागी नीर में डरता (आतिर जुड़
गोरखनाथ (कबीर)

इस प्रकार मिश्रित बोलियों के रूप में गोरखनाथ, निर्गुण नाथपंथी साधुओं में मिलते हैं। विद्यापति के देशी भाषा में मैथिली के प्राचीन रूप दिख पड़ते हैं। इसी प्रकार प्राचीन हिन्दी के कुछ नमूने सिद्धों के रचनाओं में दिखाई पड़ते हैं। जिस प्रकार नवजात बालक झूल जाता है उसी प्रकार धरती की हलचल को बर्दाश्त करो।

हिन्दी का प्रथम कवि कौन है? इस सम्बन्ध में विवाद है। जहाँ तक मुसलमानों का सम्बन्ध है वहीं हिन्दी के प्रथम कवि ख्वाजा मसऊद साद सुलेमान हैं। इनके हिन्दी की संग्रह की चर्चा खुसरो ने की है। इनकी भाषा कदाचित् प्राचीन पंजाबी मिश्रित थी।

मध्यकाल → इस काल तक आते आते हिन्दी का स्वरूप स्थिर हो गया था। इसकी प्रमुख बोलियाँ विकसित हो गयी। अपभ्रंश के रूप प्रायः समाप्त हो गये थे। हिन्दी के अपने रूप प्रयुक्त होने लगे।

ध्वनियों के रूप में इस काल अपभ्रंश का मिश्र
पहले मिले लोगों की हिन्दी में — ऋ, ङ, ञ
दो और पाँच ध्वनियाँ सम्मिलित हो गई
शेष स्वर और व्यंजन ध्वनियों के रूप वैसे
ही रहे। किन्तु इस युग के हिन्दी के संख्या
वाचक शब्दों का विकास अपने मौलिक रूप के
प्रयुक्त होने लगा — द्वादश > > बारह या
सहस्त्र > > > हजार > > > तेरहवाँ चौदहवाँ
प्रत्यय लगाकर अन्य से विकसित होने वाले
सैकड़ों सैकड़ों हजार-हजार कहीं अन्य भारत-
लाखों आदि कई शब्दों के अनुकरणात्मक
शब्दों के आधार पर विकसित हो गये।
जैसे राजा > > > राग > > > > >
हरिराई, इस युग में प्रायः दो हिन्दी दरबार
एवं साहित्य कालीन काव्यों हिन्दी प्रतिष्ठित होती
है। साहित्य कालीन काव्यों की हिन्दी में पाण्डित्यपूर्ण
बोलियों एवं संस्कृत में प्रचलित उपमानों द्वारा
और युक्तियों का प्रयोग होता था किन्तु
दरबारी भाषा फारसी थी अतः उच्च वर्ग के
लोग फारसी पढ़ने लगे। और अपनी भाषा
की प्रयुक्त शब्दों को प्रायः शुद्ध फारसी जैसे
उच्चारण करने लगे। इस शुद्ध उच्चारण के
कारण ही तो अपना बोलियों हिन्दी में भी
शब्दों की हरि से कुछ उल्लेखनीय बातें
ज्ञात हुई। इस काल में लोक बोली की
प्रकृति के प्रति आकर्षक स्थानीय बोलियों
एवं संस्कृत के प्रचलित उपमानों द्वारा अभिव्यक्ति
का प्रयोग होता था। किन्तु दरबारी भाषा
फारसी था। अतः उच्च वर्ग के लोग फारसी पढ़ने
लगे और अपनी भाषा को प्रयुक्त शब्दों का
प्रायः शुद्ध फारसी जैसे उच्चारण करते थे।

Scanned with CamScanner

इस युग अपभ्रंश के ह्रास का ही था। लेकिन
इस युग बोलियों हिंदी में अपनी शब्दों की दृष्टि से कई उल्लेखनीय बातें घटित हुईं। इस काल में लोगों की प्रवृत्ति के प्रति धार्मिक भावनाएं होने से इसी कारण प्रमुख हिंदी साहित्य भक्ति रस में इस युग के पूर्वार्द्ध तक धर्म पर लिखा गया लोगों के कारण संस्कृत के धार्मिक ग्रंथों का प्रचार बढ़ा। परिणाम यह हुआ कि आदि काल की तुलना तद्भव और देशज शब्दों का प्रयोग कम हुआ। इस काल का स्थान प्रेम शब्दों ने ले लिया। अरबी फारसी और तुर्की शब्दों ने इस काल में अधिक आ गये। हिंदी में इस समय में लगभग तीन हजार पाँच सौ (3000 3500) फारसी 2000 हजार 1000 से अरबी तथा 100 से कुछ कम तुर्की शब्द का प्रयोग बहुत कम हो रहे थे। यह निर्धारित इसी समय अपनी भाषा में आ चुके थे। और धीरे-धीरे इनमें से अधिकांश और व्याकरण से भिन्न वर्तनी प्रयोग करते रहे थे। इस काल के उत्तरार्द्ध लोगों में हमारे प्रभावित सम्पर्क हो गया अतः 100 से कुछ कम पुर्तगाली, तुर्की, फारसी एवं कुछ 100 शब्द अंग्रेजी के भी हिंदी में प्रचार हो गया। लोगों के प्रभावात के कारण राजस्थान की भाषा अवधी तथा अन्य स्थान की भाषा ब्रज में भी विशेष साहित्य लिखा गया। राजस्थानी कवियों ने डिंगल और पिंगल का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त मैथिली उर्दू, डिंगल, भोजपुरी आदि अन्य बोलियों में भी साहित्य की रचना हुई है। इस काल का प्रमुख साहित्यकार भक्ति हुए हैं जायसी सूर मीरा तुलसी केशव रसखान रहीम आदि हैं।

आधुनिक काल → इस काल में आकर हिन्दी इसकी भाषा पूर्ण विकसित हो गई। विशेषकर ईसाई मिशनरियों के प्रेसों द्वारा तथा इस युग की पत्र पत्रिकाओं द्वारा हिन्दी का पूर्ण विकास हुआ अत्यंत विख्यात ब्रजभाषा अवधी, राजस्थानी मैथिली के रूप गौण होते गये और खड़ी बोली हिन्दी एक प्रकार से छाती चली गई। हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ इतनी विख्यात हो गई है कि वह बोली न रह कर उपभाषाएँ हो गई है। इस काल में अंग्रेजी से पर्याप्त शब्द आ गये है। सामान्य भाषा में भी इनकी संख्या 3000 के आसपास है। शिक्षा प्रचार प्रसार के कारण इधर संस्कृत शब्द बहुत आये हैं और बहुत से पुराने तद्भव और देशज शब्द अप्रचलित हो गये हैं। नये पारिभाषिक शब्दों के निर्माण का कार्य भी चल रहा है और बातचीत की भाषा हिन्दी और विज्ञान आदि क्षेत्रों की IMP राजभाषा बनती जा रही है। साहित्य के क्षेत्र में मुख्यतः खड़ी बोली का प्रयोग हो रहा है। राजनीतिक प्रधान युग होने के कारण हिन्दी की भाषा को प्रमुखता मिलना स्वाभाविक ही था। हिन्दी में एक नई ध्वनि आ गई। इसका प्रयोग ऑफिस कॉलेज आदि अंग्रेजी शब्दों में हो रहा है ध्वनियों की दृष्टि से कुछ विकास भी दृष्टिगत हो रहा है। आदि काल में हिन्दी ने दो संयुक्त स्वर ऐ और औ को अपनाया था। अब ये ध्वनियाँ धीरे-धीरे संयुक्त स्वर के स्थान पर मूल स्वर होती जा रही है। ऐसा लगता है कि आगे चलकर ऐ और औ में केवल संवृत विवृत और विवृत का भेद रह जायेगा। मूल संयुक्त का नहीं। हिन्दी में रूपों का प्राधान्य मुख्यतः राजा शिव प्रसाद सिंह

Scanned with CamScanner